ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा
2003

मात्स्यिकी और जीविकोपार्जन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोचीन - 682018

झींगा मत्स्य पालन में प्रशिक्षण का महत्व

हरदयाल सिंह एवं सुदय प्रसाद
केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, पंजाब

भारतीय मीठाजल झींगापालन में तेजी से परिवर्तन हुआ है यह परिवर्तन साधारण जलकृषि से वैज्ञानिक जलकृषि की ओर किसानों का बढ़ता हुआ रूझान है। देश के उतरी राज्यों में इस परिवर्तन की नींव पड़ चुकी है। परिवर्तन का यह बीज नई वैज्ञानिक-खोजों के कारण पनपा है। अधिक आय तथा उत्पादन देनेवाली तथा मीठाजल के साथ-साथ हल्के नमकीन पानी में पलने एवं बढने वाली रोगरोधी झींगा की किस्मों और जलखेती के नये तौर तरीको के कारण उत्पादन तथा आय का वर्षों से रुका हुआ बांध टूट गया है और पहली बार तालाब से दुगने से भी अधिक झींगा उत्पादन तथा पैसा अर्जीत करना सम्भव हो सका है। कांटों से युक्त और देर से तैयार होने वाली मछली की किस्में पंजाब और हरियाणा के लोग पसन्द नही करते हैं। उसके स्थान पर कांटा रहित छोटी कद वाली, अच्छे दामों पर बिकने वाली नई किस्मों में मीठाजल झींगा का आगमन हुआ है। उपयोगीक वैज्ञानिक खोजों की जानकारी अभी तक बहुत ही कम किसानों के पास पहुंच पाई है और जिनके पास पहुंच पाई है वे भी सही तौर तरीके से इसका पालन नहीं कर पाते। अधिकतर किसान झींगा पालन करते समय इसके पालन संबंधी सही जानकारी, प्रबंधन एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण निराशा और हताशा का सामना करते हैं। ऐसे किसान थके मन से झींगा मत्स्य विशेषज्ञों के संपर्क में आते हैं और तब उन्हें ज्ञात होता है कि उनके झींगा की खेती करने के ढंग में अनेक ऐसी-महत्वपूर्ण त्रुटिया रह गई हैं जिन्हें अगर वह बीज तालाब में छोड़ने से पहले जान लेता तो आज सफल झींगा पालक किसान कहलाने का हकदार बनता।

पत्रव्यवहार : डॉ. हरदयाल सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, रीजियनल रिसर्च सेन्टर आफ़ सेन्ट्रल इन्स्टिट्यूट ऑफ फ्रेशवाटर अक्वाकलचर, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना-141004, पंजाब।

इसलिए झींगा पालन के इच्छुक किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि इसके पालन में वैज्ञानिक तकनीक विधियों को अपनाकर झींगा से होने वाली साधारण आमदनी को और अधिक बढाएं। इसलिए किसानों को चाहिए कि वे झींगा पालन से जुड़ी बारीकियों को समझें एवं जाने, जैसे :

◀ क्या आपने झींगा मत्स्य विशेषज्ञों की सलाह से तालाब बनवाया है? क्योंकि झींगा पालन के लिए तालाब की बनावट अन्य कार्प मछलीओं की तुलना में थोड़ी भिन्न होती है। तालाब की बनावट इस प्रकार होनी चाहिए कि पूरा पानी बाहर कर झींगा पकड़ा जा सके और तालाब आयताकार हो जिससे छोटे जाल का उपयोग कर झींगा को पकड़ने में सुविधा हो सके।

◀ क्या आपके पास पुराना तालाब है? यदि हां तो आपने उस तालाब का प्रबंधन झींगा मत्स्य विशेषज्ञों द्वारा करवाया है? क्योंकि पुराने तालाब की तली को स्वच्छ बनाने की दृष्टि से वरीयता के तौर पर क्या करना चाहिए यह आपको मालूम होना जरूरी है।

◀ जिस तालाब में झींगा पालन करना है क्या आपने उसकी मिट्टी की जांच करवा ली है? उसमें किस पोषक तत्व की कितनी मात्रा उपलब्ध है इन पौषक तत्वों की कमी होने पर उनकी पूर्ति किस रासायनिक खाद का प्रयोग करने से हो सकती है। जांच से यह भी पता चल पाएगा कि आपका तालाब झींगा पालन के लिए उपयुक्त है भी या नही है। आपको इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि मिट्टी के नमूने किस गहराई तक लेने चाहिए।

◀ क्या आपने झींगा का बीज छोड़ने से पहले तालाब का जलगुणवता की जांच करवाई है? अगर नही तो उसकी जांच अत्यन्त आवश्यक है।

◀ क्या आपने अपने तालाब के लिए उपयुक्त पानी की व्यवस्था की है?

◀ झींगा मछली का बीज तालाब में डालने से पहले क्या आपको झींगा के स्वभाव के बारे में कोई जानकारी है? क्योंकि इसके खाने, रहने और उसके अन्य स्वभाव के बारे में जानकारी होना जरूरी है।

◀ बीज संचयन करते समय एक हेक्टेयर तालाब में बीज की संख्या क्या हो इसकी जानकारी जरूरी है।

◀ झींगा का बीज डालने का उपयुक्त समय कौन सा है एवं डालने का सही तरीका क्या है, बीज संचयन करने से पहले और बाद में कौन सी दवाइयां एवं खाद किस मात्रा में डालनी है इन सभी की जानकारी नितान्त आवश्यक है।

◀ आपको उन मछलीयों की जानकारी भी होनी चाहिए जो उसके साथ अच्छा सामंजस्य रखकर फलती-फूलती हो और अधिक वृद्वि करने वाली हों।

◀ झींगा के भोजन और उसकी खिलाने का अनुपात की जानकारी होनी चाहिए।

◀ क्या आपको झींगा के स्वास्थ्य प्रबंधन के बारे में कोई जानकारी है? इसकी वृद्वि के समय कौन-कौन से रोग व बीमारियां किस समय में आते हैं, तथा उसकी रोकथाम आदि की भी जानकारी होना चाहिए।

◀ ज्यादा ठंड़ के कारण झींगा मरने लगते हैं और पुराना होने पर इसकी कीमत कम मिलती है, इसलिए बिक्री योग्य झींगा को कब और कैसे पकडें इसकी जानकारी होनी चाहिए।

सीफा सेंटर लुधियाना में झींगा पालन प्रशिक्षण के समय प्रश्न पूछते हरियाणा एवं पंजाब के किसान।

◀ ताजा झींगा की मांग अधिक होती है और उसे उँचे दामों में बेचा एवं खरीदा जाता है। अतः ताजा झींगा को बाजार तक कम से कम समय में कैसे पहुचायां जाए इसकी जानकारी भी होनी चाहिए।

उपर्युक्त विषयों पर विस्तार पूर्वक जानकारी के संदर्भ में प्रशिक्षण का तात्पर्य किसी व्यक्ति को उस विषय में शिक्षित करने से है जिससे वह उपयुक्त योग्य एवं झींगा के सफल पालन करने में सक्षम हो सके। केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान (सीफा) भूवनेश्वर, किसानों को झींगा पालन के संदर्भ में समय-समय पर अपने प्रशिक्षण प्रकाशनों एवं अन्य गतिविधियों के माध्यम से जानकारी उपलब्ध करवा रहा है। झींगा पालन एवं बीज उत्पादन सम्बंधी अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम अगस्त/सितंबर के माह में दिया जाता है। इसके अतिरिक्त यदि अधिक संख्या में कुछ झींगा पालन के इच्छुक किसान प्रशिक्षण लेना चाहें तो *सीफा* उनके लिए विशेष रूप से प्रबंध करता है।

किसान भाइओं को सलाह दी जाती है कि झींगा की खेती करने से पहले इसकी खेती करने के विभिन्न तौर तरीकों को समझें। जिसमें प्रशिक्षण का योगदान हमेशा सराहनीय एवं आवश्यक होता है। किसान भाई हमेशा अपने पास के जिला मत्स्य अधिकारी मत्स्य किसान विकास प्राधिकरण, मत्स्य विभाग आदि संस्थाओं से झींगा पालन की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, सीफा, लुधियाना ने विगत तीन वर्षों से झींगा पालन तकनीक को किसानों तक पहुचाने का काम कर रहा है। इस केन्द्र के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही उत्तरी भारत में झींगा की खेती का प्रारम्भ हुआ है और इन दिनों केन्द्र ने झींगा पालन की तकनीक का विस्तार करने का बीडा उठाया है। प्रशिक्षण सम्बंधी पूर्ण जानकारी के लिए किसान भाई पत्रकवरार के पते पर सम्पर्क कर सकते हैं।

मुख्य शब्द - Keywords
मीठाजल झींगा पालन - fresh water prawn culture
आयताकार - rectangular
तली - the bottom